सम्पूर्णता वर्ष

शुभभावना सप्ताह

27.04.2014

1. स्वमान – मैं ब्रह्मा बाप समान सर्व मनुष्यात्माओं का मास्टर आदि पिता, मास्टर आदि देव हूँ।

– जैसे ब्रह्मा बाबा का हृदय आदि पिता होने के कारण सर्व के लिये सदा शुभ भावना व शुभ कामना से परिपूर्ण रहा...गाली देने वालों को भी उन्होंने गले लगाया...`सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः...` इस श्लोक के वे जीवन्त उदाहरण थे...हम भी मास्टर आदि पिता हैं तो फॉलो फादर...।

2. योगाभ्यास –

शिव भगवानुवाच –

अ. 'कोई कैसा भी काला कोयला क्यों ना हो, आप उसे चमकता हुआ डायमण्ड देखो। इससे उसका कालापन दूर होता जाएगा।`

ब. `आप शुभचिंतक आत्मायें अपनी शुभ भावना और शुभ कामना की किरणें सूर्य की किरणों मिसल विश्व के चारों ओर फैलाते रहो। यही सहज रुप की मन्सा सेवा है जो चलते-फिरते हर ब्राह्मण आत्मा वा अन्जान आत्माओं के प्रति कर सकते हो।`

स. `जैसे लाइट हाउस एक ही स्थान पर रहते हुए दूर-दूर की सेवा करता है, वैसे ही आप भी लाइट हाउस, माइट हाउस बन अपनी शुभ भावना व शुभ कामना से विश्व की आत्माओं की सेवा करो।`

3. धारणा – सर्व के प्रति शुभ भावना और शुभ कामना

- शुभ भावना और शुभ कामना पुण्य का खाता बढ़ाती है। व्यर्थ भावना, घृणा की भावना वा ईर्ष्या की भावना पाप का खाता बढ़ाती है।
- विश्व महाराजन बनने वाली आत्माओं के पास सर्व शक्तियों का वा शुभ भावनाओं का स्टॉक भरपूर होता है।
- `शुभ भावना और शुभ कामना` - यही सेवा का फाउण्डेशन है।

4. चिंतन – 'शुभ भावना का गहना – सदा पहने ही रहना'

- हमारे मन में सदा सर्व के लिए शुभ भावना और शुभ कामना कैसे रहे ?
- दूसरों के लिए शुभ भावना कहाँ नहीं रह पाती ?
- हमारी शुभ भावना से हमें और दूसरों को क्या फायदा होता है ?

5. तपस्वियों प्रति – प्रिय तपस्वियों ! प्यारे बाबा के महावाक्य हैं कि जैसे बीज में सारे वृक्ष का सार भरा हुआ होता है, ऐसे आपके हर संकल्प रुपी बीज में शुभ भावना, कल्याण की भावना, निर्बल को बलवान बनाने की भावना, दुःखी या अशान्त को स्वयं की प्राप्त हुई शक्तियों के आधार से सदा सुखी, शान्त बनाने की भावना अर्थात् यह सार भरा हुआ हो। तब कहेंगे बाप समान विश्व कल्याणकारी, मास्टर आदि देव आत्मा।